सालासर के श्री हनुमान | By Rajendra Jain |

सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं
रिझाने आए हैं कि भाग्य जगाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं

राजस्थान में सालासर है भारत का एक गावँ
जहाँ विराजे हनुमान जू कल्पतरु की छाँव
जिस दिन से बालू मिट्टी पर पड़े प्रभु के पाँव
उत्सव लगता हर दिन बाबा होता हर्ष-उल्लास
उस हनुमान की गाथा हम दोहराने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं

सिर पर झूले स्वर्ण छत्र और माथे मुकुट विराजे
लाल-लाल लख रूप तुम्हारा, सूर्य-चंद्र भी साजे
हाथ में सोटा अनुपम बाबा, कानों कुंडल साजे
अष्ट पहर तेरे आँगन में राम नाम धुन बाजे
हम भी राम राम जय राम गुंजाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं

झांझ नगाड़े बजे द्वार पे और बजे शहनाई
प्रति पल आनंद छाया, तूने ऐसी ज्योत जगाई
जात-जड़ूला पहन आते, मिलकर लोग-लुगाई
अम्मा के संग बाबू आते, बहनों के संग भाई
सवामणी कर चूरमा भोग लगाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं

राम के काज सवारे प्रभु जी अब हमको भी तारो
अर्जी भक्तों ने की बाबा करके कृपा विचारो
हम सब आए शरण तुम्हारी, हमरा कष्ट निवारो
तेरा तुझको सौंप दिया प्रभु, आकर इसे संवारो
हनुमत हम तेरे हैं याद दिलाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं
अब तो जागे भाग्य हमारे, भजन सुनाने आए हैं

रिझाने आए हैं कि भाग्य जगाने आए हैं
रिझाने आए हैं कि भाग्य जगाने आए हैं
सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं

सालासर के श्री हनुमान को आज रिझाने आए हैं

श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a4%be%e0%a4%b8%e0%a4%b0-%e0%a4%95%e0%a5%87-%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%b9%e0%a4%a8%e0%a5%81%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%a8-by-rajendra-jain/